Lectur series No:-22.

TOPIC,

(1.) Mimansa: Dharma

Dr. Surita Kumari
Subject- Philosophy.
B.A part-I (S)
A.N.D College Shahpur Patory, Samastipur,

Ans:-

धर्म का अर्थ (Meaning of Dharma) :→ धर्म मनुष्य को उसके नैतिक कर्तव्यों की ओर संकेत करता है। डॉ पी० वी० काणे के अनुसार, " धर्म का अभिप्राय किसी विशेष ईश्वरीय मत से नहीं वरन जीवन के एक तरीके या आचरण की एक संहिता (code) से है जो

जैसे :- व्यक्ति तथा समाज के एक सदस्य के रूप में एक व्यक्ति के कार्यों एवं क्रियाओं को नियमित या नियंत्रण करती है और जिसका उद्देश्य व्यक्ति में क्रमबद्ध विकास करना तथा

तथा उसको इस योग्य बनाना है कि मानव जीवन अस्तित्व

P.T.O

के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच सकें।"

डॉ० शर्मा ने कहा है कि "धर्म का सिद्धान्त सभी प्राणियों की रक्षा का सिद्धान्त है।"

अतः हम कहते हैं "उन नैतिक नियमों को धर्म के अन्तर्गत माना जाता है जिनका प्रभाव एक व्यक्ति के आचरणों पर इस प्रकार पड़े कि वह सभी प्राणियों की रक्षा करे और किसी को भी किसी प्रकार की हानी न पहुँचाये।"

कहा जा सकता है कि व्यक्ति और समाज से सामाजिक जीवन को व्यवस्थित तथा उन्नतशील बनाने के लिए कल्याणकारी नैतिक धर्मों को ही धर्म कहा जा सकता है। अन्य शब्दों में समष्टि तथा व्यष्टि के कल्याण के लिये शास्त्रों द्वारा निर्धारित नैतिक नियमों को धर्म कहा जाता है।

धर्म के प्रमुख पक्ष:- (Main Aspects of Dharma): धर्म के दो पक्ष

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्रधान है। यथा:- सार्वभौमिक पक्ष तथा सामाजिक पक्ष

(अ) सार्वभौमिक पक्ष :-> धर्म का सार्वभौमिक पक्ष कर्तव्यों के उस विस्तृत क्षेत्र के प्रति संकेत करता है जो जाति, प्रान्त, देश, काल आदि की सीमाओं से अन्तरबद्ध नहीं है। मनुष्य के

आचरणों के सम्बन्ध में कुछ ऐसे भी नियम हो सकते हैं जो प्रत्येक समूह, जाति, देश और काल में सामान्य हो। धर्म का यह पक्ष धर्म या नैतिक कर्तव्यों के स्रोतों पर बल देता है।

(ब) धर्म का सामाजिक पक्ष:-) धर्म का सामाजिक पक्ष स्वयं व्यक्ति के सामाजिक जीवन से संबंध रखने वाले नियमों और कर्तव्यों से सम्बन्धित है इसमें वर्ण धर्म, आश्रम धर्म, कुल तथा देश धर्म, राजधर्म आते हैं।

धर्म के रूप (Forms of dharma) :- धर्म के अनेक स्वरूप हैं शास्त्रों ने धर्म के भिन्न रूपों की चर्चा की है।

(1) मानव धर्म : समस्त मानव जाति के लिए समान ही है etc. END